शकून

मै उसे प्रायः इस तरह सम्वोधित किया करता थाःशकून एक वात तो वताओ।
ःपूछो न!पूछते क्यों नही!क्या वात है!कहते हुए वो सारे काम धाम छोड़ कर आके मेरे पीछे खड़ी हो जाती थीः
पूछो न!
ःसामने तो आओ
ःनही आ सकती
ःक्यों नही आ सकती!
ःदुपट्टा गले मे नही है।
ःक्यों नही है!
ःन जाने तुम मुझसे क्या पूछने वाले हो!घवराहट मे दुपट्टे का ध्यान ही नही रहता।
इन चन्द शब्दो मे शकून का पूरा स्वरूप और उसका समर्पण न जाने मेरे जीवन मे कितनी वार साकार हुआ है! ये मै वता नही सकता।
उन दिनो मेरे मन की भूमि इतनी उर्वरा थी कि उस पर छींटा हर एक बीज प्यार की शक्ल मे उग कर देखते ही देखते एक वलवती वेल जा वनता था।अपने उम्र की हर लड़की,चाहे वो जिस रूप रंग की हो,चाहे जिस जाति या परिवार की हो,अप्सरा जैसी लगती थी।मेरे पास एक वड़ा ही निर्दोष और निष्कलंक प्रेम था जो निष्पक्ष सभी की सराहना करने लगता था और मेरी रातों की नींदे हर लेने पर अमादा हो जाता था,पर मेरे इस प्रेम को किसी का आकलन करना नही आता था।जितना अरिपक्व मै था,उतना ही अपरिपक्व मेरा प्रेम भी था।यही वजह रही कि इन सम्वन्धों को कोई खास उम्र नही मिली।
अपने इक्कीसवें वर्ष मे मै कितना परिपक्व था या फिर मेरा प्रेम कितना परिपक्व था,ये मै वता नही सकता।ये मेरे संक्रमणों के भी दिन थे।
वनारस मे आये मुझे ज्यादे दिन नही हुए थे।ये शुक्रवार का दिन था और मै नदेसर से एक वस लेकर अपने गॉव जा रहा था।अचानक मुगलसराय मे मेरी नजर एक लड़की पर पड़ी।वो वगल की कतार मे महिलाओं के लिए आरक्षित एक सीट पर एक अधेड़ महिला के संग वैठी हुई थी।पहले सोचा कि वो शायद अपनी मॉ के साथ है,पर जव उसे मैने उनके संग एक वार भी वात करते न देखा तो समझ गया कि ये अधेड़ औरत मात्र उसकी सहयात्री है।उसके कुर्ते का रंग सफेद था।उसने अपने गले को एक सफेद दुपट्टे से ढ़ॅक रखा था।जव तव उसके कुर्ते के गले पर क्रोसिये की कढाई दिख पड़ती थी।उसके गले पर हल्के दूव की नाई वालें उग आई थीं,जो रह रह कर पसीने से जा भींगती थी।उन्हे वो एक सफेद मुचड़े से रूमाल से पोंछ लिया करती थी।उसने वालियॉ पहन रखी थीं,जो मुझे असली सोने की लग रही थीं।उसके गालों पर भी हल्के हल्के रोंये उग आये थे।जव तव वो अपनी दोनो हॉथे समेट कर अपने दोनो पैरों के वीच कर लेती थी।उसके दाहिनी कॉख के नीचे आया हल्का सा उभार शायद उसके स्तन का था।उसने अपनी चोटी सामने कर रखी थी।मेरी नजरें रास्ते भर उसी पर टिकी रहीं।चन्दौली कव आया,इसका मुझे पता ही न चला।जव वो उठ कर सामने वाले गेट की ओर वढी तव मैने देखा कि उसने एक सफेफ रंग का ही चुस्त पैजामा पहन रखा है।पसीने मे भींगा उसका कुर्ता उसकी पीठ से जा चिपका है।उसकी व्रा के फीते तक नजर आ रहे हैं।जव मेरी नजर उसके वैग और उसके चप्पलों पर पड़ी,तव मेरा मन एकमत से कह उठा कि ये लड़की किसी गॉव की तो नही लगती है।
वो वस से नीचे उतरी भी न थी कि चन्दौली वाजार मे वैठे मनचलों की नजरें एक उकाव की तरह उस पर जा जमीं।सॉपों की तरह वलखाते उसने चन्दौली वाजार छोड़ा।मेरी वस का भी मोटर कॉख कूॅख कर घरघराया।मेरे सूखते कंठ मे जैसे कोई अमृत की वूॅद डाल गया हो।आये दिन दवी आवाज मे फिल्मी गानें गुनगुनाता और गाता फिरता था।ये गाने ज्यादेतर जुदाई के ही होते थे,मिलन के नही।
उसे मैने ढंग से देखा भी नही था,पर उसका वजूद कहीं मेरे आस पास ही अहर्निश अपनी मौजूदगी जतलाता रहता था।न जाने कितनी वार मै उसे अलग अलग ढंगों से अपना परिचय दे चुका था।स्नात उसे अपनी कल्पनाओं मे वुला कर उससे वातें करने लगता था।कभीं कभीं तो उसके सामने अपनी शिकायतों की पोटली ही खोलके वैठ जाता था।मुझे अपनी इस उम्र मे जो सवसे वड़ी शिकायत थी,वो ये थी कि मुझे कई स्तरों पर ठीक से न समझा जा रहा है और न सुना जा रहा है।अपनी सफाई देने वैठ जाता था।
अगर देखा जाय,तो मै वनारस उन तमाम लोगों को ये समझाने आया था कि जिस दौड़ को वो जीवन की दौड़ कहते और मानते आये है,वो मेरे लिए कोई दौड़ नही है।एक वने वनाये फ्रेम मे मुझे फिट नही किया जा सकता है।जीवन मे भाग्यशाली सिर्फ वो नही है,जो वने वनाये लिकों पर चलते आये है।वचपन से लेकर अपनी इस उम्र तक एक वात जो मै पुरगौर देख रहा था वो ये था कि हमे हर वात के लिए वाध्य किया जाता है।विना कोई उचित कारण वताये आदेश दिया जाता है।जहॉ तक मेरी नजरें जाती थीं,वहॉ तक मुझे सिर्फ वन्धनों का एक जन्गल ही नज़र आता था।लोग क्या कहेंगे!इसका हमारे जीवन पर एक आधिपत्य सा हो गया है।एक विद्रोह मेरे मन मे वचपन से ही पल रहा था।
इन सारी वातों के वावजूद न जाने यू पी कॉलेज के तमाम लेक्चरारों को मुझमे क्या भाया!पहल की डाः विनय सिंह ने।एक दिन क्लास के वाद मुझे रोक लिये।उन्हे दो चार मिनट ही लगे होंगे मुझे ये वताने मे कि उन्होने किस आशय से मुझे रूकने को कहा है,पर मेरा मन न जाने किन किन संशयों से जा घिरा था।
ःप्रमोद!आज शाम का खाना तुम्हे हमारे संग खाना है।
ःऐसा क्यों सर!

ःऐसे ही।साथ बैठेंगे।बातें करेंगे।साथ मे रूखा सूखा खा भी लेंगे।
ःआप की बात मै नही टाल सकता.पर आप के घर पर और कौन कौन हैं!
ःमिसेज तो पिछले दो महीनों से अपने मायके मे हैं.पर मेरी एक छोटी बहन मेरे साथ ही रहती है।इसी कॉलेज मे बी ए प्रिवियस मे है।खाना चौका उसी के हॉथों मे है।आज उसी के हॉथों का बना खाना तुम्हे खाना है।
ःकितने बजे आऊॅ सर!
ःसात बजे आ पाओगे!
ःहॉ हॉ।
ःपास मे ही बिन्देसरी सिंह कॉलनी है।ई बत्तीस मे हमारे ही कॉलेज के एक्स वाईस प्रिन्सिपल डाः एस एन सिंह का अपना निजी मकान है।मै उनका किरायेदार हूॅ।पहली मंजिल पर हमारे पास एक तीन कमरे का फ्लैट है।सामने गेट पर मेरा अलग से कौल बेल है।ढूॅढ लोगे न!
ःढूॅढ लूॅगा सर
इस तरह का ये मेरे जीवन मे पहला आमंत्रण था.जो कहीं न कहीं मेरे मन को छू गया था।
मेरी अधीरता की कोई सीमा ही न थी।घड़ी का कॉटा जाकर पॉच पर ऐसे फॅस गया था कि हिलने का नाम ही न ले रहा था।अब तक सैकड़ों बार आईने के सामने जाकर अपने बाल सॅवार चुका था।कई साथी आकर गोदौलिया चलने की पूछ चुके थे।सबको मना करके मै अनवरत घड़ी ताके जा रहा था।साढे छ भी न बजे होंगे और मै अपने कमरे से निकल चुका था।न्यू हॉस्टल के सामने फैले खेतो मे मकई की फसलें खड़ी थीं।उनके बीच से गुजरती सर्पीली पगडंडियॉ भोजुबीर होते हुए अर्दली बाजार से जा मिलती हैं।अर्द ली बाजार मे पहला बॉई तरफ जाने वाला रास्ता बिन्देसरी सिंह कॉलनी को जाता है।ई बत्तीस ढूॅढने मे मुझे कोई दिक्कत नही हुई।डाः साहब का कौल बेल दबाया ही था कि बाहर का विशाल फाटक जा खुला।एक पक्के सॅकरे रास्ते से होते हुए मै आगे बढा।सामने सीढियॉ नज़र आई।अभी मै दो चार सीढियॉ ही चढ पाया था कि डाः साहब के अपार्टमेन्ट के खुलने की आवाज आई।दरवाजे पर डाः साहब की बहन हॉथ जोड़े खड़ी मिली।उसे देख कर मै चकराया।एक अजीब सा साम्य उसमे और उस बस मे मिली लड़की मे था।वही कद.वही काठी.वही कन्धे.वही बाल।सबकुछ वही था।उससे मै कुछ पूछने ही वाला था कि डाः साहब लपकते हुए आये और बड़े प्यार से मुझे अपने ड्राईन्गरूम मे लिवा गये।अपनी बहन से मेरा परिचय उन्होने खुद ही करवायाःप्रमोद!ये शकुन्तला है।घर पर हम सभी इसे शकून कहके बुलाते हैं।हमारे ही कॉलेज मे बी ए प्रिवियस मे है।और शकून ये है प्रमोद।मेरा स्टूडेन्ट है।इससे पहले धनबाद मे रहा है।
इस संक्षिप्त परिचय के बाद शकून कीचन मे चली गई और मै एक हल्की नजर डाः साहब के ड्राईन्गरूम पर डाले जा रहा था।बड़े नक्काशीदार फर्निचर्स वहॉ लगे हुए थे।शायद डाः साहब को दहेज मे मिले होंगे।ड्राईन्गरूम के अलावे वहॉ और दो कमरे थे.जिनके पर्दे पहले से ही अच्छी तरह तान दिये गये थे।सोने के कमरे रहे होंगे।डाः साहब से मैने उनकी उम्र तो नही पूछी.पर उनके विवाह को अभीं दो वर्ष भी नही हुए थे।यू पी कॉलेज भी उन्होने आज से तीन वर्ष पहले ही ज्वायन किया था।
ःकुछ पीना वीना है या सीधे खाना ही खाओगे!
ःसीधे खाना ही खाएॅगे सर।
छोटे मोटे प्रश्नो से होते हुए वो मेरे परिवार पर आये।अब मै उन्हे अपने माता पिता और अपने भाई बहनों से अपरोक्ष परिचय करवा रहा था।भोजापुर का नाम सुन कर वो चौंक पड़ेःअरे तुम बनारस के ही रहने वाले हो!
ःहॉ सर!बस पिताजी की नौकरी के वजह से हम सभी धनबाद मे रहे और वहीं के स्कूलो मे गये।भोजापुर बस गर्मी की छुट्टियों मे ही आ पाते थे।
ःभई रहने वाले तो हम भी बरही के हैं.पर हम भी वहॉ कभीं रहे नही।हमारी स्कूलिंग वगैरह लखनऊ मे ही हुई।
अब बरही का नाम सुन कर मुझे चौंकना पड़ाः
ःकौन सी बरही!चन्दौली के समीप जो है!
ःहॉ भई
ःफिर तो आपने बरही के बाबू भीष्म सिंह का नाम सुना ही होगा!
ःहॉ हॉ वही न!जिनका कत्ल हो गया था!
ःहॉ सर वही।
ःपर तुम उन्हे कैसे जानते हो!
ःउनकी पत्नी और मेरी मॉ एक ही गॉव से हैं।उनसे मेरा रिश्ता तो कोई नही है.पर उन्हे मै मौसी कहता हूॅ।सर!इस गॉव की हर लड़की को मौसी कहने का मन करता है।वो किसी भी जाति की क्यों न हो.कितनी भी गरीब क्यों न हो.एक दूसरे को अपनी बहन मानती हैं और एक दूसरे के बच्चों को अपने पेट का जना।सर!कभीं कभीं मुझे अपने ननिहाल की बड़ी याद आती है।बनारस आने के बाद मै जब भी अपने गॉव जाता हूॅ मौसी से मिल कर ही जाता हूॅ।मुझ पर बड़ा स्नेह रखती हैं।
ःसर!आप भी तो बरही आते जाते होंगे!
ःमै तो कम ही.पर शकून वहॉ आती जाती रहती है।
ःफिर तो मै आप की बहन से एक बार मिल चुका हूॅ।
ःकहॉ बरही मे!
ःनही सर।बस मे।मेरे सामने ही बैठी थीं।
ःये कब की बात है!

ःपिछले से पिछले सप्ताह की सर
ःअरे शकून!प्रमोद तुमसे आज से पहले भी एक बार मिल चुका है।
शकून भागती ड्राईन्गरूम मे आई।उसके दुपट्टे का एक छोर सरक कर उसके गले से नीचे आने ही वाला था।उसने उसे तपाक से उसे सम्हाल लिया।
ःकहॉ मिल चुके हैं आप मुझसे!
ःबस मे।जिस बस से आप बरही जा रही थीं.उसी से मै भी अपने गॉव जा रहा था।
ःअरे भाई!तुम तो अपने घर के ही निकले।आओ बाकी बातें खाने की मेज पर होंगी कहके डाः साहब मुझे मेज तक लिवा गये।खाने की मेज स्टील के न जाने कितने दोनो से भर चली थी।एक कुर्सी खींच कर मै बैठ गया।थोड़ी सी सब्जी और एक रोटी अपनी थाली मे डाल कर मै शकुन्तला के आने का इन्तजार करने लगा।थोड़ी ही देर मे वो एक दोने मे गरम गरम चावल डाले आई
मेरी थाली पर उसकी नजर क्या पड़ी कि लपकते हुए आईःउपवास पर हैं क्या!.कहके दूसरी सब्जियों से मेरी थाली भर दी।दाल और रायते से मेरे कटोरे भर दिये।
डाक्टर साहब हॅसे जा रहे थेःशकून ये बर्दाश्त ही नही कर सकती कि उसका बनाया खाना कोई ढंग से नही खाये।
शकुन्तला को अब मै दो जरियों से जानता था।एक डाः साहब के जरिये और दूसरा बरही के जरिये।अमूमन इस तरह के परिचय को तत्काल नामों से हटा कर भईया दीदी जैसे सम्बन्धों से आबद्ध कर दिया जाता है.पर जब पहली बार शकुन्तला ने खाने की मेज पर मुझे भाई साहब कहा.तो मैने उसे टोकाःमारिये गोली इस तरह के सम्बोधनो को।हम एक दूसरे को नामों के जरिये भी तो बुला सकते हैं।मुझे बचपन से ही इस तरह के बनाये सम्बन्ध अच्छे नही लगते थे।
शकून झटपट अपना दुपट्टा सम्हालने लगी।लड़कियॉ बड़ी जल्दी मन और ऑखों की भाषा पढ लेती हैं।
रह रह कर मेरी ऑखें उसके वक्षों पर जा अॅटकती थीं!न जाने ईश्वर ने अपने किन किन कारीगरों को शकून के सृजन का काम सौंपा था.पर जिस कारीगर को उन्होने उसके वक्षों का काम सौंपा था.वो सबसे अव्वल कारीगर निकला।नजर पड़ते ही मेरी सहजता और समान्यता सिहरने लगती थी।
खाने के बाद जब हम दुबारा सोफे पर आये.तो शकुन्तला झटपट वहॉ एक ऐशट्रे रख गई।
ःसिगरेट वगैरह पीना शुरू किये हो कि नही!पूछते हुए डाः साहब मेरी तरफ एक सिगरेट बढाये
ःपीना तो शुरू कर दिया हूॅ.पर खरीदना नही।धनबाद से बड़े कैलकूलेटिव पैसे आते हैं सर।
सुन कर डाक्टर साहब हॅसने लगे।
ःबनारस कैसा लग रहा है!
ःबेहद सुन्दर।मै अब तक न जाने कितनी शहरों मे गया हूॅ सर.पर बनारस जैसा शहर अब तक कहीं नही देखा।इस शहर के पास एक आत्मा है.जो इसे जीवन्त बना के रखी हुई है।मै यहॉ बस पिछले छ महीनो से हूॅ.पर मैने इस शहर को हॅसते.रोते और उदास होते भी देखा है।
ःऔर यू पी कॉलेज कैसा लग रहा है!
तब तक शकुन्तला अपने रसोई का काम निपटा कर डाः साहब के बगल मे आ बैठी थी।उसके गालों पर मुस्कराने के दौरान पड़ने वाले पिट्स भी किसी बहुत ऊॅचे कारीगर का ही काम रहा होगा।शायद यही कारीगर उसके दॉतों के लिए भी जिम्मेदार रहा होगा।एक दूसरे पर चढे.बगूले के पंख जैसे सफेद उज्जवल दॉत।
ःठीक अभीं अभीं आप ने क्या पूछा था सर!
ःयू पी कॉलेज कैसा लग रहा है!
ःकिस मामले मे!
ःहर मामले मे
ःसर!जहॉ तक मेरा ख्याल है.बनारस मे ये एक मात्र कॉलेज है.जो बनारस का प्रतिनिधित्व कर रहा है।उतना ही मौलिक है.जितना बनारस।
गई रात हम बैठे गप्पें मारते रहे।न जाने कितनी सिगरेटें मैने डाक्टर साहब के साथ फूॅक मारी।परिचय के नाम पर अब हमारे पास बताने को कुछ शेष नही बचा था।डाः साहब के पास एक बेहद ब्रिलियेन्ट कैरियर था।बी एच यू के टॉपर रह चुके थे।बिना समय गॅवाये डॉक्टरेट भी कर चुके थे।फिजिकल कैमिस्ट्री पर उनकी गजब की पकड़ थी।यन्ग थे.स्मार्ट थे डायनमिक थे।गले मे सिल्क का मफलर डाले जब वो हमारी क्लास मे आते थे तो क्लास की लड़कियॉ अपनी सुध बुध खो कर उन्हे अपलक निहारने लग पड़ती थीं।वही नही.उनके तमाम दोस्त.जो तकरीबन उन्ही के बैच के थे और हमारे दूसरे विषयों की क्लासें लेते थे.बेहद सुदर्शन थे और काफी खुले विचारों के थे।बाकी दूसरे पढाते तो बुरा नही थे.पर एक नम्बर के दकियानूकूस.संकीर्ण.पूर्वाग्रही.ठहरे पानी की तरह दुर्गन्धमय पैदायशी हिन्दुस्तानी हिटलर थे।जब तब वो हमे अपनी रंगदारी भी दिखाते थे।
अब हर शनिवार को मै नियम से डाः साहब के घर जाने लगा।कभीं कभीं डाः साहब घर पर नही भी होते थे.पर शकुन्तला घर पर ही होती थी।अन्दर आने की जिद़ करती थी.पर मै दरवाजे पर ही उसे नमस्ते कहके वापस आ जाता था।ये बस दिखावा ही था कि मै वहॉ सिर्फ डाः साहब से मिलने आता हूॅ।इम्प्रेशन बनाने का हथकन्डा था।
ःसोमवार की क्लास मे अलग से ले जाकर डाः साहब मुझे डपटते थेःमेरा इन्तजार कर लिये होते यार।घर वापस आया.तो शकून बताई कि तुम अभीं अभी वापस गये हो।थोड़ी देर बैठ नही सकते थे!
उनका इस तरह डपटना मुझे बहुत अच्छा लगता था।वो मेरे प्रति बेहद व्यक्तिगत होते चले जा रहे थे।
कभीं कभीं कैम्पस मे शकुन्तला भी दिख जाती थी।या तो वो अपनी नज़रें झुका लेती थी या फिर सबकी नजर बचा कर अपनी भाव

भंगिमा से हलो कह जाती थी। रविवार से शुक्रवार तक बस यही मेरे दिमाग मे रहता था कि शनिवार को गरीब बेचारी शकुन्तला पर कामदेव की तरह अपना कौन सा वाण तानूँ!कपड़े लत्ते, जूते मफलर, झूठी भाव भंगिमा, इधर उधर के चूराये डायलाग्स या शेर, फिल्मी अभिनेताओं की नक्ल, यही सब तो आधुनिक कामदेवों के तीरकश की तीरें हैं।

अब मै भी उसे शकून कहके पुकारने लगा था और वो मुझे प्रमोद कहके। डाः विनय सिंह से भी मित्रवत होने मे मुझे कुछ ज्यादे वक्त न लगा। थोड़ी सी दूरी रख कर मै उनसे सभीं विषयों पर बातें कर लेता था। उनके जरिये मै उनके कई हमउम्र मित्रों से भी मिला। उनमे से कई मुझे पढाते भी थे। वो भी जब कभीं मुझे सिगरेट वगैरह ऑफर करते थे, तो मै ना नही करता था। सिगरेटों की लत तो मुझे इन्टरमिडिएट से ही लग चुकी थी। बरही मे मौसी और नामवर भईया के संग बिड़ी फूँकता था और अपने गॉव मे रमौता चाची और छोटकी आजी के संग हुक्का गुड़गुड़ाता था। सूरती वाला पान भी खाने लगा था। मौके बेमौके न्यू हॉस्टल के वार्ड सरवेन्ट काशी दादा से खैनी भी रगड़ने को कह देता था। दारू वारू या भॉग गॉजे से अभीं तक बचा हुआ था।

एक विद्रोह जो मेरे मन मे पल रहा था, रह रह कर आवारगी की शक्ल मे करवटें बदलता रहता था। एक अकर्मण्यता की आग भी न जाने कब से मेरे मन मे सुलग रही थी। अब मुझे शकून जैसी लड़की भी मिल गई थी। इस सुलगती आग को शकून के प्यार की हवा मिल चुकी थी। अब ये भभकने लगा था। उसकी लपटें लपलपाने लगी थीं। आग आवारा और अनियंत्रित होने की जिद्द करने लगा था। मुझे पता नही था कि बनारस मे बी एस सी का दूसरा वर्ष मेरे जीवन मे सिर्फ तबाहियों को लाने वाला है!

बनारस मे मित्रों की एक बहुत बड़ी मंडली पहले से ही मेरा इन्तजार कर रही थी। इनमे से तमाम मेरी तरह बढवलिया थे और चन्दौली के इर्द गिर्द बसे गॉवों के रहने वाले थे। गई रात तक न्यू हॉस्टल के छत पर गफलिया जमती थी। भंजौटी मे हममे कोई किसी से पीछे न था। क्लासों मे जाने का सिलसिला तो न जाने कब का बन्द हो चुका था। परिचितों और रिश्तेदारों की समझ मे ही न आ रहा था कि आखिर मुझे क्या हो गया है!धनबाद के भेजे गये पैसे तो महीने के आरम्भ मे ही खत्म हो जाते थे। फिर इधर उधर से बस या ट्रेन के किराये का इन्तजाम करके कभीं इस रिश्तेदार के यहॉ तो कभीं उस रिश्तेदार के यहॉ। जब उनके यहॉ एकाध दिन रह कर चलने को होता था, तो वो अपनी सामर्थ्य के अनुसार दस बीस रूपये मेरी जेब मे ठूँस ही देते थे। मुँह पर मुझसे कोई भी कुछ नही कहता था, पर मेरे पीठ पीछे मुझे हर कसौटी पर कस के अवारा घोषित किया जा चुका था। कभीं कभीं अपने दोस्तों से भी उधार मॉग कर उन्हे धर्मसंकट मे डाल देता था।

मॉ की बड़ी इच्छा थी कि मै किसी तरह पी एम टी कम्पीट करके किसी मेडिकल कॉलेज मे दाखिला पा जाऊँ। एक बार फार्म भी भरा। कोचिन्ग के नाम पर धनबाद से ठीक ठाक पैसे वसूला। परीक्षा के नाम पर लखनऊ भी गया, पर इम्तहान मे न बैठा। लखनऊ की सैर करके वापस बनारस आ गया।

अचानक एक दिन मुझे शकून का एक पत्र उसके पड़ोस के एक लड़के के हॉथों मिला। इस लड़के को मै जानता था। उसका बड़ा भाई हमारे साथ ही पढता था।ःकल से कुछ बुखार सा आ रहा है। भईया भाभी से मिलने भागलपुर गये हुए हैं। थोड़ी देर के लिए आ सकते हो!तुम्हारी शकून।

आनन फानन बिन्देसरी कॉलनी भागा। शकून को हल्का सा बुखार आ रहा था। माथे पर हॉथ रखा ही था कि वो उसे अपने दोनो हॉथों मे लेकर रोने लगी। उसने मुझे डाः रामजन्मसिंह के पास जाने तक न दिया। सोचा था कि जाकर उनसे बुखार कम करने वाली दो चार टैबलेटें लाता। अपने बिस्तर पर पड़ी शकून मुझे अपनी पनीली ऑखों से देखती रही। जब भी मै उसे दो घूँट पानी के लिए सहारा देकर उठाता था, मेरे कन्धे पर अपना सर रख देती थी। जब तब उसका बुखार जानने के लिए उसका माथा छू लिया करता था। अपनी दोनो हॉथों से मेरा हॉथ थाम कर सहलाने लगती थी। एक बार तो मेरी एक कलाई थामे दॉई तरफ करवट भी ले ली। जहॉ जहॉ मेरी बॉह को उसके बदन का हिस्सा छूने को मिला, वहॉ वहॉ एक जहर सा उतरने को आया था।

शकून के मन मे क्या था, ये मै नही बता सकता!उसे अपने दुपट्टे तक की खबर न थी। आज कुर्त्ता भी उसने खुले गले का पहन रखा था। इधर उधर से कुछ नजर भी आ जाता था। अपने इन आमंत्रणों की एवज मे न जाने उसे मुझसे क्या चाहिये था!उसे न तो मै किसी तरह का आश्वासन दे सकता था और न ही अपने हॉथों डाः विनय सिंह के विश्वासों का हनन कर सकता था। मुझे आवारा करार दिया जा चुका था, पर मैने अपना चरित्र नही खोया था। शकून अपनी बुखार की आड़ मे सिर्फ मेरा सामीप्य चाहती थी और ये सामीप्य मेरे लिए आज भी एक बड़ा सापेक्षिक शब्द है।

रात के एक बजने को आये थे। जब भी चलने को होता था, जर्बदस्ती शकून मुझे बिठा लेती थी। अब तक उसे मै न जाने किस किस का वास्ता दे चुका था।

ःमुझे कुछ नही सुनना है। आज की रात तुम यहीं रहोगे। यही उसका जवाब होता था।

अब मुझे थोड़ा सख्त होना पड़ाःतुम्हे क्या हो गया है!तुम मेरी कौन सी परीक्षा लेना चाह रही हो!कुछ ऊँच नीच हो गया, तो हम डाः साहब को क्या जवाब देंगे!हर चीज की एक हद होती है।

कहके मैने अपना हॉथ छुड़ाया और चलने को को हुआ। तपाक से अपना बिस्तर छोड़ कर वो मुझे बड़ी मजबूती से भींच ली।

दो चार सप्ताह ही गुजरे होंगे कि मै बिना किसी बात के अपने हॉस्टल के धोबी पर हॉथ छोड़ बैठा और उसकी सायकल छीन ली। रंगदारी की दिशा मे ये मेरा पहला कदम था। अब मै छिटपुट इधर उधर लोगों को पीटने और धमकाने लगा। एक ब्राम्हण बिरादरी का लड़का अर्दली बाजार के क्षेत्र मे हल्का फूल्का रंगदार बने बैठा था। मै उसे भी सबक सीखाने जा पहुँचा। दो चार हुर्रा मार कर उसकी कलाई वाली घड़ी छीन लाया। मुझे ये पता नही था कि उसके पिता यू पी कॉलेज के तमाम लेक्चरारों के घर संकटमोचन की पूजाओं पर बुलाये जाते हैं। सीधे हॉड़ों के छत्ते मे हॉथ डाल दिया था। बिजली की तरह मेरा ये कारनामा यू पी कॉलेज के परिशर मे फैल गया। अर्दली बाजार के थानेदार का एक साला हमारे साथ ही पढता था। उसे भी मै ठीक थाने के सामने पकड़ कर कूटा। कूट काट कर भोजापुर भाग लिया। फिर मुझसे जीऊता आ टकराया। पता नही कहॉ से एक कट्टा भी थमा गया। अब मै अपनी कमर मे एक कट्टा भी खोंसने लगा। निर्भय बनारस मे घूमा करता था। एक पॉव मौत के हवाले करते ही तत्काल

भय मन से भाग निकला। निरूद्देश्य मै अकेला बनारस की गलियों और गंगा की घाटों पर रात बिरात भटकता रहता था और आये दिन औघड़ों और गुसाईयों से जा उलझता था। जाहील गँवार राख रूख पोते, लँगोटा पहने जिसे देखो उसे धमकाते फिरते थे। न जाने कहाँ कहाँ के चोर उचक्के बनारस मे आ बसे थे!मुझे भस्म कर देने की धमकियाँ देते थें

डाः विनय सिंह ने मुझे अपने घर आने से कभीं नही रोका। उन्हे मेरे कई कारनामों की खबर थी। कईयों की शायद नही भी होगी। हर बार वो बातों को घूमा फिरा कर अपनी निराशाओं पर लाया करते थे। वो मुझसे बेहद निराश चल रहे थे। वो ही नही, उनके दूसरे दोस्त भी।

ःअभीं भी तुम्हारे पास पर्याप्त समय है। थोड़ा सा मन लगा लो। तुम्हारा फर्स्ट डिविजन कहीं नही गया है। बी एस सी प्रिवियस मे जो तुम्हारा पेस था, बना रहता, तो तुम टॉप करते। हमसे तुम्हे जो भी मदद चाहिये, बताओ। हम तैयार बैठे हैं। हमारी समझ मे ये बात नही आती कि यकायक तुम इस तरह बदल कैसे गये!यही सब करने के लिए तुम बनारस आये थे!

सर झुकाये मुझे जो भी जो कुछ कहता था सुन लेता था। मुझे नही लगता था कि मै अपने आप को समेट पाऊँगा।

डाः राजनाथ सिंह का भी बुलावा उनके ऑफिस से आया, जो उन दिनों हमारे कॉलेज के प्रिन्सिपल हुआ करते थे। घन्टों बिठा कर समझाते रहे। बेटे से ही उनके वाक्य शुरू होते थे और बेटे पर ही खत्म होते थे। पर मै इतना थेंथर बन चुका था कि मुझ पर किसी के कहे का कोई असर ही नही होता था।

अब डाः विनय सिंह मुझसे थोड़ा रिजर्व रहने लगे थे। अपने घर पर मिल तो लेते थे पर बड़े अनमने ढंग से। झटपट शकून तीन कप कप चाय बना कर मेज पर रख जाती थी। जो थोड़ी बहुत बात हो पाती थी, उसी से हो पाती थी। डाः साहब तो अपनी नजर अखबार से हटाते तक न थे। दरअसल अब हमारे बीच बात चीत का कोई विषय भी न रह गया था। पढाई के नाम पर भी क्या पूछते!मैं क्लासों मे जाता ही न था। शकून तटस्थ बैठी मुझसे दो चार औपचारिक बातें पूछ लेती थी। बड़े बोझिल मन से अपने कमरे मे वापस आता था और शकून के नाम एक पत्र लिखने बैठ जाता था।

गई रात तक बैठा सोचा करता था कि कल से सब कुछ छोड़ कर अपने दूसरे साथियों की तरह पढाई लिखाई मे सिरियस हो जाऊँगा ,पर सुबह होते ही फिर से सब कुछ भूल कर शहर की तरफ बढ जाता था। बी एस सी फाईनल मे मेरा फेल होना एक उफनते गरजते तूफान की तरह बढा चला आ रहा था। ठीक उसी ट्रैक मे मेरी नौका बह रही थी। जब भी मै उसका कोर्स बदलना चाहता था, मेरे दोनो हॉथ शिथिल पड़ जाते थे।

डाः विनय सिंह भी कोई न कोई बहाना ढूंढ रहे थे। न जाने कैसे उनके हॉथो मेरे शकून के नाम लिखे पत्र लग गये। इसे वो अपने विश्वास का हनन समझ बैठे। मैने उनकी पीठ पर चाकू चलाया था। एक शिक्षक और विद्यार्थी के पवित्र सम्बन्ध को बदनाम किया था। बीच मे शकून भी कुछ कहना चाह रही थी। उसे वो डपट कर उसके कमरे मे भेज दिये।

ःआइन्दा अगर इस तरफ रूख किये या फिर शकून को एप्रोच किये, तो मुझसे बुरा कोई न होगाः आवारा, गुन्डा कहके वो सारे पत्र मेरे मुँह पर दे मारे।

मै भी चुप नही रहाःआपका ये क्षोभ मुझसे नही है। मेरी उपलब्धियों से है। आवारा गुन्डा कहने से पहले आप को सोच लेना चाहिये था। यू आर ए टीचर एन्ड यू शूड मेन्टेन योर डिगनिटि। वरना कभीं औंधे मुँह गिरेंगे आप।

कहीं न कहीं मुझे इस झन्नाटेदार तमाचे की जरूरत थी। मै जगा और उसी शाम अपना बोरिया बिस्तर बाँधा और न्यू हॉस्टल को अल्विदा कहा। भईया के संग बी एच यू के गुर्टू हॉस्टल मे रहने लगा। एक महीने के बाद इम्तहानों को शुरू होना था। जी जान लगा कर इम्तहान की तैयारियों मे लग गया। सारी रात जगा रह जाता था।

जिस तूफान से मै अपनी नाव बचाना चाहता था बचा नही पाया। उसने मेरी नाव को अपने घेरे मे ले लिया और उसे उछाल उछाल कर तोड़ मारा।

मै बी एस सी मे फेल हो गया। मेरा नाम ले लेकर मेरी मॉ रिश्तेदारों के सीनो पर जो मूँग दला करती थीं, उसका परिणाम अब उनकी ऑखों के सामने था। सबसे तेज धावक धरासाई होकर भूमि पर जा गिरा था और उसके चचेरे फूफेरे और ममेरे धावक मध्यम श्रेणी के होते हुए विजय फीता चूम रहे थे। मेरे जो घनिष्ट साथी थे, वो किसी तरह अपनी जीवन नौका थर्ड डिविजन मे निकाल ले गये थे। भगवान भला करे इस विधि संकाय का, जो थके हारे योद्धाओं को अपनी शरण मे लेकर कम से कम उन्हे सुस्ताने का थोड़ा बहुत समय दे देता है। उनके ब्याह जैसी समस्याओं को भी हल कर देता है। मेरे अनन्य साथियों को काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के विधि संकाय मे दाखिला मिल गया और सर छुपाने के लिए भगवान दास हॉस्टल मे छत भी। काशी हिन्दु विश्वविद्यालय मे मात्र दाखिला पा लेना किसी योग्यता से कम न था। आई आई टी और मेडिकल संकायों की छॉव मे यहॉ के हर संकाय को एक घनत्व हासिल हो चुका था। इस विश्वविद्यालय के छात्र, चाहे वो जिस संकाय के भी हों न सिर्फ उत्तर प्रदेश मे, बल्कि दूसरे प्रदेशों मे भी, यहॉ तक कि विदेशों मे भी तहलका मचाये हुए हैं। पंडित मदन मोहन मालवीया कुछ सोच समझ कर ही बनारस मे इस विद्यालय के लिए भीख मॉगने निकले थे, वरना दूसरे प्रदेशों मे उन्हे भीख नही मिलती क्या!

बचा मै और मुझ जैसा गरीब!

अब अपने लोग भी मुझसे कन्नी काटने लगे थे। रिश्तेदारियों मे मेरे नाम की थू थू हो रही थी। अपने घनिष्ट मित्रों के परिवारों मे भी उनके दरिद्र उपलब्धियों के लिए मुझे दोषी ठहराया जा रहा था। धनबाद से पैसे आने बन्द हो गये थे। मुझसे न्यू हॉस्टल वाला कमरा भी वापस ले लिया गया था।

यू पी कॉलेज के तमाम लेक्चरार जिनके रिश्तेदारियो मे एकाध लड़कियॉ ब्याह की उम्र मे आ चुकी थीं, प्रारम्भ मे मेरे नाम की बोली लगाते थे, ठीक वैसे ही जैसे घोड़ों की रेस मे आये एक नये दुलत्ती मारते सुदर्शन घोड़े पर लगाया जाता है। जिसके घर भी चला जाता था, भव्य स्वागत होता था। अब तो बरामदे से ही मुझे उनका कोई साला या बहनोई ये कह कर वापस कर देता थाः डाः साहब घर पर नही है।

खाते पीते घर का होते हुए भी मै बनारस मे भूखा प्यासा घूमता रहता था।
मेरे डूबे दिनमान को अब कौन अपना अर्ध्य देता!एक विकल डाली से लगभग झड़ जाने वाले पल्लव को कौन अपना प्राण देता!
गर्मी की छुट्टियॉ चल रही थीं।एडमिशन्स वगैरह शुरू नही हुए थे।मै चौक के एक धर्मशाले मे रहने लगा था।डाः साहब की कॉलनी मे ही मेरी एक दूर के रिश्ते की बहन रहती थीं।मै जब भी उनसे मिलने आता था तो काशीदादा से भी मिलने जाता था।मेस वगैरह बन्द चल रहे थे।हॉस्टल बिल्कुल खाली हो चला था वरना मेहमानों के आने पर जब भी लड़के बाहर से उनके जरिये समोसा वगैरह मॅगवाते थे तो उन्हे भी एकाध मिल जाता था।किसी किसी दिन तो वो मेसों मे खाना भी नही लेने जाते थे।समोसों से ही उनका पेट भर जाता था।अब उन्हे अपनी लिट्टियॉ खुद सेंकनी पड़ती थीं।मै उनसे जब भी मिलने गया वो लिट्टियॉ ही सेकते मिले।जर्बदस्ती मुझे बिठा कर एक अल्यूमिनियम की थरिया मे बैगन और आलू की सब्जी डाल कर एकाध लिट्टि परोस देते थे।उनका डाः साहब के घर पर भी आना जाना होता था।ऑटा वाटा पीसवा देते थे।सब्जियॉ वगैरह खरीद लाते थे।उन्ही से मुझे शकून के बी ए मे फर्स्ट डिविजन आने का पता चला और ये भी पता चला कि वो एम ए बी एच यू से करने वाली है।मुझे हर बार काशी दादा से यही सुनने को मिलता था कि मै धनबाद वापस चला जाऊॅ।
डाः साहब अपनी पत्नी को लिवाने भागलपुर गये हुए थे।शकून लखनऊ से बनारस आ चुकी थी।एक दिन बड़ी हिम्मत करके मै उससे मिलने गया।उससे मेरा हाल चाल तक न पूछा गया।दरवाजे पर ही अपनी विवशतायें बताने लगी।क्षत्रिय समाज का हवाला देने लगी।अपने भईया के एहसानों को गिनवाने लगी।जब तब भयभीत दॉये बॉये झॉक लेती थी कि कोई मुझे देख तो नही रहा है।ःअब मै तुमसे नही मिल सकती।मुझसे मिलने की कोशिश भी नही करना।भईया की बड़ी बदनामी होगी।इस जीवन मे तुमने मुझे खो दिया है प्रमोद।
मेरे सौन्दर्यबोध की मखमली भूमि पर पहली बार किसी ने पत्थरों की बारीश की थी।
ःये सब कुछ तुम अपने होश मे कह रही हो न!
ःहॉ!बिल्कुल
ःफिर ठीक है शकून!ये मुलाकात हमारे जीवन की आखिरी मुलाकात है।ये तुम्हारे कुछ पत्र है मेरे पास।इन्हे तुम अपने संरक्षण मे ले लो।पता नही उनमे लिखे डायलोगों की तुम्हे फिर से किसी और के लिए जरूरत पड़ जाये।
मै पैदल ही चौक की ओर बढ चला।अप्रत्याशित गोदौलिया मे धनबाद के अग्रवाल साहब की लड़की सुमन टकरा गई।धनबाद मे हमारी प्रारम्भिक शिक्षा साथ साथ हुई थी।मुझे उसके बनारस आने का पता तो था पर इसके पहले मै उससे कभीं नही मिला था।बचपन की सहेली थी।मुझे देखते ही अपनी सायकल एक ओर धकेल कर गले आ लगी।हालचाल पूछने लगी।
ःक्या बताऊॅ सुमन!बस चल रहा है।बी एस सी मे फेल हो गया हूॅ।कोई रास्ता नही सूझ रहा है।सोच रहा हूॅ कि धनबाद वापस चला जाऊॅ।
ःतुम और बी एस सी मे फेल!ये कौन सी कहानी तुम मुझे सुना रहे हो!
ःमै तुम्हे कोई कहानी नही सुना रहा।
ःये हुआ कैसे!
ःवैसे ही जैसे दूसरी चीजे हो जाती हैं।तुम मेरे लिए धनबाद का टिकट कटवा सकती हो!धनबाद पहुॅचते ही तुम्हारे पैसे किसी के हॉथ तुम्हारे घर भिजवा दूॅगा।तुमसे मिलना लिखा था वरना आज बिना टिकट के बाम्बे मेल मे बैठने वाला था।
ःतुम मुझे इस हाल मे मिलोगे सपनो मे भी नही सोची थी।पास मे ही बैंक है।हजार रूपये से तुम्हारे काम चल जायेंगे!
ःमुझे इतने पैसे नही चाहिये।दे सको तो दो सौ रूपये दे दो।
बॉह थामे सुमन मुझे बैंक ले गई और जर्बदस्ती दो सौ रूपये निकाल कर मेरी जेब मे ठूॅस दी।
इसी शाम मैने शकून और बनारस को अल्विदा कहाः
बड़ी विक्षिप्त अवस्था मे मै धनबाद वापस आया।मुझे न तो किसी बात के लिए डॉटा गया और न तो किसी बात के लिए पूछा गया।पिताजी इस बात को भॉप चुके थे कि अगर मुझ पर किसी भी बात का दबाव डाला गया तो उसका नतीजा अच्छा न होगा।एक दिन वो मेरे कमरे मे किसी किताब का बहाना बना कर आये और एक कुर्सी खींच कर बैठ गये।शायद मुझसे कुछ कहने आये थे पर कुछ कह नही पा रहे थे।मै चुपचाप उनके कुछ कहने का इन्तजार कर रहा था।सोच रहा था कि शायद कहेंगे कि ऐसे कब तक बैठे रहोगे!आगे की क्या सोची है!तुम जैसे मेधावी लड़के से हमे कितनी आशा थी!पर मुझे ऐसा कुछ भी मुझे सुनने को न मिला।उलटे मेरा हाल चाल पूछने लगे।
ःतुम्हारी मॉ को मैने सख्त शब्दो मे तुम्हे परेशान करने से मना कर दिया है।तुम्हे किसी भी बात की जब भी जरूरत हो बेझिझक मेरे पास आ जाना।संक्रमण किसके जीवन मे नही आता है प्रमोद जी!
समय के साथ मेरे जीवन मे घहराये क्षोभ और निष्क्रियता का धुन्ध थोड़ा छॅटने को आया था।रोज ही टाऊनहॉल और इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स की लाईब्रेरी से न जाने हिन्दी के कितने उपन्यास उठा लाता था और उन्हे गई रात तक पढा करता था।अब मात्र यही मेरी व्यस्तता रह गई थी।सिर्फ नहाने धोने के लिए ही अपना कमरा छोड़ता था।चाय नाश्ता और खाना बड़ी भाभी समय से मेरे कमरे मे दे जाती थीं।जब तब उन्ही से चन्द बातें हो जाती थीं।
एक वर्ष गुजरने को आया था।एक बार दिमाग मे ये भी ख्याल आया कि मै क्यों नही धनबाद मे प्राईवेट से बी ए करके कमीशन्स की परीक्षाओं मे बैठ जाऊॅ!अपने देश मे डाक्टरों की इतनी कमी है क्या!क्यों मेरी मॉ मुझे हर शर्त्त पर डॉक्टर ही बनाना चाहती हैं!परन्तु मेरा ये सोचा मेरे मन मे ही रह गया।विधि को कुछ और ही मंजूर था।
एक दिन मै मनि के ढाबे पर अपने बचपन के दोस्तों के संग बैठा हुआ था कि न जाने किस दिशा से एक पुराने पढे अखबार का पन्ना उड़ता हुआ आया और आकर मेरे पॉवो से लिपट गया।इससे पहले कि मै उसे मोड़ माड़ कर फेंकता कि अचानक मेरी नजर

एक इश्तेहार पर पड़ी. जो मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन एन्ड सोशल अफेयर्स की थी। अपने देश से बीस हायर सेकेन्ड्री पास लड़कों का मास्को. प्राग और वर्सावा के लिए चयन होना था। फार्म भर कर भेजने की आखिरी तिथि के अभीं भी तीन दिन शेष बचे थे। तत्काल दिल्ली जाने पर ही काम बन सकता था।

ठीक इसी दिन एक और घटना मेरे जीवन मे घटी। इस घटना को मेरे अलावे सभी लोग भूल गये। उन्हे इस बात की लेशमात्र भी जानकारी नही है कि इसका मेरे मास्को जाने से कितना बड़ा ताल्लुक है।

रास्ते पर ओझा जी जाते दिखे। वो स्कूल ऑफ माईन्स के पोस्टआफिस मे डाकिया थे। मुझ पर नजर पड़ी. तो मेरे हॉथों मे चिट्ठियों का एक पुलिन्दा ही थमा गए। ज्यादेतर चिट्ठियॉ सरकारी थीं और पिताजी के नाम थीं। एक चिट्ठी भाभी के नाम की थी। जब शाम का खाना भाभी ले कर आई. तो बताने लगीं कि उनकी छोटी बहन विमला का पत्र आया है। उसके देवर का विवाह होने वाला है। यू पी कॉलेज मे कोई डाः विनय सिंह है उन्ही कि बहन से।

ःकिसकी बहन से!ः मै चौंक पड़ा

ःडाः विनय सिंह की बहन से। उन्हे तो आप जानते होंगे।

ःहॉ। जानता तो हूँ। कब है ये विवाह!

ःअट्ठाईस मई को है।

ःलड़का क्या करता है!विमला ने उसके बारे मे भी कुछ लिखा है क्या!

ःबस्ती पी डब्लू डी मे इन्जीनियर है। उसके सबसे बड़े भाई भी बनारस पी डब्ल्यू डी मे चीफ इन्जीनियर हैं। बाबूजी उन्हे जानते हैं। इस परिवार मे जिसे देखो. वही इन्जीनियर है। सब के सब डोनेशन दे कर अपनी पढाई किये हैं। एक से एक घूसखोर इस परिवार मे बैठे हैं जी।

ःविवाह कहॉ से हो रहा है!

ःलखनऊ से।

ःविवाह मे आप भी जायेंगी!

ःअगर अम्मा बाबूजी जाने देंगे तो जरूर जाऊँगी।

मेरी तो सारी शाम ही अस्त व्यस्त सी हो गई। ःइस जीवन मे तुमने मुझे खो दिया है प्रमोद!ःएक घन की तरह मेरे मन पर पड़ रहा था। देखते ही देखते ये शकून कितनी अन्जान और अपरिचित हो चली थी। जिस प्यार मे प्रारम्भ से ही एक अपेक्षा आ कर समा जाती है. वो प्यार प्यार नही रह जाता है। ऐसे प्यार का यही हश्र होता है।

ऑसू की मोटी मोटी बूँदें टप टप करके टाईम्स ऑफ इन्डिया के उस पन्ने पर गिरने लगीं. जो मै मनि के ढाबे से उठा लाया था।

इस पन्ने को लेकर दूसरे दिन मै पिताजी की ऑफिस मे जा पहुँचा और अखबार का ये पन्ना सामने खोल कर उनके टेबल पर फैला दिया और न चाहते हुए भी बच्चों की तरह रोने लग पड़ा।

इश्तेहार पढने के बाद बोले कि समय तो बहुत कम बचा है और फिर ये ऑल इन्डिया मेरिट की बात है। हायर सेकेन्ड्री मे भी तुम बहुत अच्छा तो नही कर पाये थे।

ःफिर भी मुझे दिल्ली जानें दें। मेरा दिल्ली जाना बहुत जरूरी है बाबूजी।

ःठीक है। मै नरायन सिंह से आज ही शाम की किसी गाड़ी मे तुम्हारा रिजर्वेशन करवा देता हूँ। फार्म बगैरह जमा करवा कर अगर हो सके तो कल ही वापसी की कोई गाड़ी ले लेना। दिल्ली मे लम्बा नही रहना। वरना तुम्हारी मॉ घबरायेंगी।

जब इन्टरव्यू के लिए दिल्ली से मेरा बुलावा आया था. तो इन्टरव्यू बोर्ड के सामने मिनिस्ट्री के फर्स्ट सेक्रेटरी को सम्बोधित करके मैने उनसे कहा थाःमिस्टर मल्लिक!ःमै जानता हूँ कि मेरे हायर सेकेन्ड्री के मार्कस अप टू मार्क नही है. पर मुझे आप मास्को जाने दें। मेरा मास्को जाना बहुत जरूरी है सर!आई एम ऑन द बर्ज ऑफ डिके।

ःवेल प्रमोद!गो टू मास्को

मास्को के लोमोनोसोव यूनिवर्सिटी का मुझे लिखित निमंत्रण मिल चुका था। पूरे धनबाद मे ये खबर बिजली की तरह फैल चुकी थी। मेरा एक दोस्त. जो उन दिनो धनबाद के एकमात्र दैनिक आवाज मे काम करता था उसमे भी ये खबर छपवा दिया था। मेरी मॉ के पैर तो जमीन पर पड़ते ही न थे। बधाईयों पर बधाईयॉ उन्हे मिल रही थीं। उनके उत्साह का तो जैसे कोई अन्त ही न था। रास्ते चलते लोगों को रो कर उन्हे मेरे मास्को जाने के बारे मे बताने लग पड़ती थीं। तीन दिनो के बाद होली थी और हमारे घर पर गुझिया बनने का कार्यक्रम शुरू हो चला था। इस होली मे हमारे घर पर खूब धूम धड़क्का होने वाला था। रह रह कर मुझे बरही के होली की याद आती थी। डाः साहब से ही मुझे पता चला था कि होली की छुट्टियों मे शकून बरही गई हुई है। ठीक होली के दिन मैने नदेसर से चन्दौली की पहली बस ली और बरही जा पहुँचा। मौसी जग चुकी थीं। उनके चरणों पर थोड़ा सा अबीर रख कर उनके चरण छूआ। गॉव मे किसी ने बकरा काटा था। नामवर भईया अपने हिस्से की मीट लेने गये हुए थे।

मौसी झटपट चूल्हे पर चाय बनाने जा बैठीं। मै एक बॅसहटी खींच कर चूल्हे के पास लाया।

ःइस बार आपके लिये कुछ नही ला पाया। पैसे ही नही थे। बड़ी मुश्किल से बस का किराया पैदा किया

ये सुनना भर था कि मौसी चूल्हा छोड़ कर उठीं और जाके अपने सन्दूक से बीस रूपया निकाल लाईःमना मत करिहा ए बच्चा। होली ह। भेंट समझ के स्वीकार कई ला। तोहरे अउर नामवर के अलावे हमरे पास कउनो कूनवा थोड़े धरल ह। याद कइके मिले आवा ला. इहे का कम ह हमरे बदे!

एक ठे बिड़ी धरावा न!तब तक चईयो बन जाई।

ःतोहरे बदे भी एक ठे धराई!

ःधरावा धरावा। नेकी अउर पूछ के। हमरे तकियवा के नीचे रखल है। दियासलईओ ओइजें ह!लेके आवा।

मेरी मौसी के मुँह से सिर्फ दो चीजें झड़ती थीं:पहली आशीष और दूसरी अमृत।
पूर्वाहय ग्यारह बजे मौसी के ऑगन का दरवाजा अकस्मात खुला।इसके पहले कि मै सम्हलता,पूरे एक बाल्टी का रंग शकून मुझ पर उड़ेल मारी।कुछ रंग ऑखों मे भी चला गया था।मै हॉथो से अपनी ऑखे मले जा रहा था और शकून इस मौके का फायदा उठा कर मेरे गालों पर कोई पक्का रंग लेपे जा रही थी।वो अपनी एक चचेरी बहन के साथ मुझसे होली खेलने आई थी।न जाने वो कब से होली खेले जा रही थी।बदन का कुर्त्ता भींग कर उसके बदन से जा चिपका था।उसके बदन का एक एक उभार मुझे नज़र आ रहा था।सब कुछ के बावजूद हमे भाई बहन के रिश्ते की आड़ तो मिली ही हुई थी।इसी का नजायज फायदा शकून उठा रही थी।रह रह कर मुझे पीछे से जकड़ कर अपनी बहन से मुझ पर पानी उलेचने को कहती थी।मेरे हॉथों मे कोई भी रंग नही होता था,फिर भी वो उन्हे जर्बदस्ती अपने हॉथों मे लेकर अपने गालों पर रगड़ने लग पड़ती थी।मै भी कोई हिमालय से चल कर आया महात्मा नही था।जब तब अबीर लेकर उसके और उसकी बहन के कुर्त्ते के गले मे अपनी हॉथ ॲड़सा देता था या फिर मौका पा कर उन्हे इधर उधर सहला भी देता था।:धर पकड़ की लूट है लूट सको तो लूट।बुरा न मानो होली है:ऐसे अवसर को मै भला कैसे छोड़ता!मौसी के ऑगन मे धान का एक ढेर था,जो एक कनात से ढॅका तोपा पड़ा था।एक बार तो इन लक्ष्मीबाईयों ने मुझे उस पर गिरा कर ढेर कर दिया।शकून मुझ पर पसरी हुई थी।हटने का नाम ही न ले रही थी।मैने भी उसे परे करने का प्रयास न किया।उसे जितना जहर मेरी बदन मे उतारना है,मेरी बला से उतारे।
गई दोपहर तक मौसी के ऑगन मे ये दोनो गोपियॉ धमाल मचाती रहीं।पैंट तो फिर भी सलामत थी,पर कमीज का इन्होने चिथड़ा बना डाला था।इनार पर नहाने बैठा।पता नही मेरी गालों पर शकून कौन सा रंग रगड़ गई थी,छूटने का नाम ही न ले रहा था।
दुबारा शकून शाम को आई।मै नामवर भईया के धोती की लूंगी लपेटे,उन्ही का कुर्त्ता पहने,उन्ही के साथ चूल्हे के पास ही बिछी एक दरी पर बैठा उन्हे अपने बारे मे सुनाये जा रहा था।सफेद सलवार और गाढे नीले कुर्त्ते मे शकून कितनी फब रही थी!आज पहली बार मेरा ध्यान एक बात पर गया:शकून जिस रंग का कुर्त्ता पहनती थी,उसी रंग का दुपट्टा भी ओढती थी।आते ही उसने अपना दुपट्टा पास रखी एक कुर्सी पर लटकाया और चूल्हे पर जा बैठी।रह रह कर मुझे कनखियों से देख लिया करती थी।मेरे मन भवन के ईंटें भरभरा कर गिरने लग पड़ते थे।इस भवन की बुनियाद तो न जाने कब की हिल चुकी थी!
अगर मै चाहा होता,तो कब का शकून का सर्वस्व टटोल मारा होता।ये मैने नही किया।अब वो अपना सर्वस्व अपने होने वाले पति को सौंपे।पहने अपने पति के नाम का मंगलसूत्र।भजे उसके नाम का भजन।अब मुझे इस देश मे रहना ही नही है।इस देश मे बुद्धिवादिता सराही जाती है।
मेरी विदाई पर कम से कम आधा धनबाद तो स्टेशन पर आया ही होगा।इनमे ज्यादेतर मेरे बचपन और मेरी अवारगी के दिनो के दोस्त थे।ये मुझे रूलाये जा रहे थे और मै इन्हे रूलाये जा रहा था।मेरे पिताजी के भी तमाम दोस्त सपत्नी धनबाद स्टेशन पर मुझे छोड़ने आये हुए थे।राजधानी के आने की घोषणा हो चुकी थी।पिछले बाईस वर्षो मे मेरी जड़े अपनी देश की भूमि मे न जाने कहॉ कहॉ न जाने कितनी गहराईयों तक जा चुकी थीं!समेटी नही जा रही थीं।कल मुझसे बनारस छूटा।आज मुझसे धनबाद छूट रहा है।तीन दिनो के बाद मुझसे मेरा देश भी छूटने वाला है।मै मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन एन्ड सोशलवेलफेयर की एक स्कॉलरशीप पर आठ वर्षो के लिए मास्को जा रहा था।
अब शकून को भी दूसरों की तरह सिर्फ मेरी यादों मे जीना था।
ये सत्य है कि चढते सूर्य को सदैव पूजा जाता है,पर एक डूबते सूर्य को जो अर्ध्य चढाये जाते है,वो उन्हे कभीं नही भूलता है।यही वजह है कि मै आज तक अपने संक्रमण के दिनो के साथियों को नही भूला हूँ।अग्रवाल साहब की बेटी सुमन को आज तक पत्र लिखता हूँ और उसके परिवार के लिए सुखद कामनायें भेजता हूँ।
दोपहर का खाना खा कर मै छत पर आ चुका था।गर्मियों के दिन थे।मेरे कमरे का कूलर और पंखा हमेशा की तरह अविराम चल रहा था।कई वर्षो के बाद बनारस आने का संयोग बन पाया था।खाने की मेज पर मॉ पिताजी से संक्षिप्त बातें हो जाया करती थी ,परन्तु मै बर्लिन मे अच्छी तरह से हूँ या नही,इसे विस्तार से जानने के लिए वो अक्सर छत वाले कमरे मे आ जाया करते थे।उनके पीछे भईया भाभी भी आ जाते थे।मै उन्हे आद्योपान्त मास्को और बर्लिन की बातें सुनाने बैठ जाता था।आवेश मे आ कर मैने अपना देश और परिवेश छोड़ तो दिया था,पर इस बात का दुख एक शूल बन कर मेरे हृदय को आज तक भेंदता गोदता रहता है।
छत पर जब मै अकेला होता था,तो मुंडेर से लग कर खड़ा हो जाता था।घर के सामने से गये करौंधी रोड को परिवहन के तमाम साधन रौंदते रहते थे।ये अधकच्ची सड़क सुबह चार बजे जग जाया करती थी और इसे सोते सोते रात के एक दो बज जाते थे।बनारस शहर को जी टी रोड से मिलाने वाली ये सड़क देखते ही देखते बनारस की सबसे व्यस्त सड़क हो चली थी।इसके ईर्द गिर्द बसे गॉवों के लोग भी इस सड़क से बनारस शहर से जुड़े हुए थे।खेतों मे पैदा की गई सब्जियॉ ये ठेलों रिकसों सायकलों या फिर अपने सर पर लादे बनारस की मन्डियों मे बेचने आया करते थे।हमारे घर से लगी करौंधी रोड पर ही न जाने कहॉ कहॉ से आये लोग इधर उधर से पतरे जमा करके अपनी झुग्गियॉ डाले हुए थे।इनका विभत्स जीवन रह रह कर मुझे कचोटता रहता था।
मुझसे मिलने जो भी आता था,भले ही वो रह रह कर अपने अभावों का जिक्र करता था,पर उसके चेहरे पर भारतीय होने का दर्प चमकता रहता था।मेरे पास ये अभाव तो नही थे,परन्तु ये दर्प भी नही था।
अक्सर मै बनारस मे अपने बिताये दो वर्षो मे खो जाया करता था।यहॉ मै आज से ठीक चौदह वर्ष पहले सन छिहत्तर मे उदय प्रताप कॉलेज मे बी एस सी करने आया था।बनारस के लोगों ने अपनी बॉहें फैला कर मेरी अगवानी की थी।जब सन अठत्तर मे मैने बनारस छोड़ा,तो यही लोग मेरे लिए अपरिचित और अन्जान बन चुके थे।मुझे न जाने किन किन कसौटियों पर कसके आवारा घोषित कर चुके थे।मैने किसी का कुछ नही बिगाड़ा था,फिर भी ये मुझसे किनारा कर चुके थे।पान बिड़ी सिगरेट या फिर किसी भी लड़की से बेहिचक बात कर लेने को ये आवारगी का नाम दे चुके थे।मेरे मन मे आये संक्रमण पर किसी का ध्यान ही नही गया।बने बनाये फ्रेमों मे ये मुझे भी फिट करना चाहते थे,जिसके लिए मै बना ही न था।इनकी बनाई सारी परिभाषायें मुझे गलत और थोंपी हुई

लगती थीं।उन्हे मै मानने को तैयार नही था।गलत आचरण के लोग अपनी उम्र का फायदा उठाते हुए मुझे आचरण की शिक्षा देने चले थे!जिस पढाई लिखाई से हमारा मूल्यांकन किया जाता था.उसमे भी मेरी आस्था नही रह गई थी।
दिन के यही कोई तीन बज रहे होंगे।सीढियों पर किसी के आने की आहट हुई।भाभी आती दिखीं।मै कमरे की तरफ बढाः
ःनीचे शकून आई हुई है।आप से मिलना चाहती है।उसी के हॉथों एक कप चाय ऊपर भिजवाऊॅ!
ःकौन शकून!
ःभूल गये क्या जी!अरे वही विनय बाबू की बहन।विमला की देवरानी।
ःअच्छा अच्छा।वो शकून।उसे मेरे बनारस आने का कैसे पता चला!
ःअजी!हमारे घर के पीछे ही तो रहती है।अक्सर मुझसे मिलने आती है।करौंधी रोड पर जो आरे वाली मशीन है न.उसके पति की है।बनारस मे न जाने उनकी कितनी ट्रकें गिट्टियॉ ढोती हैं!पीछे ही दो मंजिले का बड़ा सुन्दर मकान है उनका।
ःउसे बच्चे वच्चे भी हैं!
ःबच्चे वच्चे नही हैं जी।उसका गर्भ ही नही ठहरता।मुटा कर भैंस हो गई है।
पलक झपकते एक एक करके शकून की सारी यादें ऑखों के आगे से गुजरती चली गई।उसी ने तो कहा था कि तुम मुझे खो चुके हो प्रमोद!आइन्दा मुझसे मिलने की कभीं कोशिश न करना।शायद समय के साथ वो ये सब भूल चुकी थी.पर मै नही।उसने जो मेरा अपमान किया था.उसकी उसे क्षमा चाहिये थी।ये क्षमा मै तत्काल कहॉ से लाता! अब मेरे मन के दिनमान को उसके किसी अर्ध्य की जरूरत नही थी।
भाभी के जरिये मैने उसे कहलवा दिया कि मै उससे मिलना नही चाहता।न सिर्फ आज.बल्कि कभीं नहींःःः

प्रमोद कुमार सिंह
बर्लिन बारह दिसम्बर दो हजार दस